हज़रत इब्राहीम

और

सारा

hazrat ibrāhīm aur sārā

Hazrat Ibraheem and Sarah

(Urdu—Hindi script)

© 2022 Chashma Media.
published and printed by
Good Word Communication Services Pvt. Ltd.
New Delhi, INDIA

Bible text is from UGV.
illus.: https://sweetpublishing.com, R. Gunther (www.gunther.net.nz), J. P. Stanley (https://yoplace.com)

for enquiries or to request more copies:
askandanswer786@gmail.com

हज़रत आदम और हव्वा की ना-फ़रमानी के बाइस उनका ख़ुदा के साथ रिश्ता टूट गया। इसके बावुजूद अल्लाह ने उन्हें नहीं छोड़ दिया। उसकी मरज़ी थी कि इनसान का उसके साथ ख़ास रिश्ता बहाल हो जाए। यही वजह थी कि उसने हज़रत नूह और उसके ख़ानदान को कश्ती के ज़रीए सैलाब से बचाया।

बहुत-सारे बरस गुज़र गए। नूह के बेटों सिम, हाम और याफ़त के बच्चे पैदा हुए, और उन की औलाद जल्द ही पूरी दुनिया में फैल गई। ताहम लोग पहले की तरह ही ख़ुदा से ना-फ़रमान रहे और उसकी रिफ़ाक़त से दूर रहने लगे। फिर भी अल्लाह की मरज़ी थी कि उनसे रिफ़ाक़त रखे। सदियों के बाद उसने एक आदमी बनाम इब्राहीम को चुन लिया ताकि वह और उसकी औलाद उसकी बरगुज़ीदा क़ौम हों। आइए, हम वह कुछ पढ़ें जो तौरेत शरीफ़ में हज़रत इब्राहीम के बारे में लिखा है :

यह सिम का नसबनामा है : [...] तारह 70 साल का था जब उसके बेटे अब्राम, नहूर और हारान पैदा हुए। यह तारह का नसबनामा है : अब्राम, नहूर और हारान तारह के बेटे थे। लूत हारान का बेटा था। अपने बाप तारह की ज़िंदगी में ही हारान कसदियों के ऊर में इंतक़ाल कर गया जहाँ वह पैदा भी हुआ था।

बाक़ी दोनों बेटों की शादी हुई। अब्राम की बीवी का नाम सारय था और नहूर की बीवी का नाम मिलकाह। मिलकाह हारान की बेटी थी,

और उसकी एक बहन बनाम इस्का थी। सारय बाँझ थी, इसलिए उसके बच्चे नहीं थे।

तारह कसदियों के ऊर से रवाना होकर मुल्के-कनान की तरफ़ सफ़र करने लगा। उसके साथ उसका बेटा अब्राम, उसका पोता लूत यानी हारान का बेटा और उसकी बहू सारय थे। जब वह हारान पहुँचे तो वहाँ आबाद हो गए।

अब्राम की बुलाहट

रब ने अब्राम से कहा, “अपने वतन, अपने रिश्तेदारों और अपने बाप के घर को छोड़कर उस मुल्क में चला जा जो मैं तुझे दिखाऊँगा।

मैं तुझसे एक बड़ी क़ौम बनाऊँगा, तुझे बरकत दूँगा और तेरे नाम को बहुत बढ़ाऊँगा। तू दूसरों के लिए बरकत का बाइस होगा। जो तुझे बरकत देंगे उन्हें मैं भी बरकत दूँगा। जो तुझ पर लानत करेगा उस पर मैं भी लानत करूँगा। दुनिया की तमाम क़ौमें तुझसे बरकत पाएँगी।”

अब्राम ने रब की सुनी और हारान से रवाना हुआ। लूत उसके साथ था। उस वक़्त अब्राम 75 साल का था। उसके साथ उसकी बीवी सारय और उसका भतीजा लूत थे। वह अपने नौकर-चाकरों समेत अपनी पूरी मिलकियत भी साथ ले गया जो उसने हारान में हासिल की थी। चलते चलते वह कनान पहुँचे।

अब्राम उस मुल्क में से गुज़रकर सिकम के मक़ाम पर ठहर गया जहाँ मोरिह के बलूत का दरख़्त था। उस ज़माने में मुल्क में कनानी क़ौमें आबाद थीं। वहाँ रब अब्राम पर ज़ाहिर हुआ और उससे कहा, “मैं तेरी औलाद को यह मुल्क दूँगा।” इसलिए

उसने वहाँ रब की ताज़ीम में क़ुरबानगाह बनाई जहाँ वह उस पर ज़ाहिर हुआ था।

वहाँ से वह उस पहाड़ी इलाक़े की तरफ़ गया जो बैतेल के मशरिक़ में है। वहाँ उसने अपना ख़ैमा लगाया। मग़रिब में बैतेल था और मशरिक़ में अई। इस जगह पर भी उसने रब की ताज़ीम में क़ुरबानगाह बनाई और रब का नाम लेकर इबादत की।

फिर अब्राम दुबारा रवाना होकर जुनूब के दश्ते-नजब की तरफ़ चल पड़ा।

रब का अब्राम के साथ दुबारा वादा

रब ने अब्राम से कहा, “अपनी नज़र उठाकर चारों तरफ़ यानी शिमाल, जुनूब, मशरिक़ और मग़रिब की तरफ़ देख। जो भी ज़मीन तुझे नज़र

आए उसे मैं तुझे और तेरी औलाद को हमेशा के लिए देता हूँ। मैं तेरी औलाद को ख़ाक की तरह बेशुमार होने दूँगा। जिस तरह ख़ाक के ज़र्रे गिने नहीं जा सकते उसी तरह तेरी औलाद भी गिनी नहीं जा सकेगी। चुनाँचे उठकर इस मुल्क की हर जगह चल-फिर, क्योंकि मैं इसे तुझे देता हूँ।”

अब्राम रवाना हुआ। चलते चलते उसने अपने डेरे हबरून के क़रीब ममरे के दरख़्तों के पास लगाए। वहाँ उसने रब की ताज़ीम में क़ुरबानगाह बनाई।

अब्राम के साथ रब का अहद

इसके बाद रब रोया में अब्राम से हमकलाम हुआ, “अब्राम, मत डर। मैं ही तेरी सिपर हूँ, मैं ही तेरा बहुत बड़ा अज्र हूँ।” लेकिन अब्राम

ने एतराज़ किया, “ऐ रब क़ादिरे-मुतलक़, तू मुझे क्या देगा जबकि अभी तक मेरे हाँ कोई बच्चा नहीं है और इलियज़र दमिश्क़ी मेरी मीरास पाएगा। तूने मुझे औलाद नहीं बख़्शी, इसलिए मेरे घराने का नौकर मेरा वारिस होगा।”

तब अब्राम को अल्लाह से एक और कलाम मिला। “यह आदमी इलियज़र तेरा वारिस नहीं होगा बल्कि तेरा अपना ही बेटा तेरा वारिस होगा।”

रब ने उसे बाहर ले जाकर कहा, “आसमान की तरफ़ देख और सितारों को गिनने की कोशिश कर। तेरी औलाद इतनी ही बेशुमार होगी।”

अब्राम ने रब पर भरोसा रखा। इस बिना पर अल्लाह ने उसे रास्तबाज़ क़रार दिया।

जब अब्राम 99 साल का था तो रब उस पर ज़ाहिर हुआ। उसने कहा, “मैं अल्लाह क़ादिरे-मुतलक़ हूँ। मेरे हुज़ूर चलता रह और बेइलज़ाम हो। मैं तेरे साथ अपना अहद बाँधूँगा और तेरी औलाद को बहुत ही ज़्यादा बढ़ा दूँगा।”

अब्राम मुँह के बल गिर गया, और अल्लाह ने उससे कहा, “मेरा तेरे साथ अहद है कि तू बहुत क़ौमों का बाप होगा। अब से तू अब्राम यानी

‘अज़ीम बाप’ नहीं कहलाएगा बल्कि तेरा नाम इब्राहीम यानी ‘बहुत क़ौमों का बाप’ होगा। क्योंकि मैंने तुझे बहुत क़ौमों का बाप बना दिया है। मैं तुझे बहुत ही ज़्यादा औलाद बख़्श दूँगा, इतनी कि क़ौमें बनेंगी। तुझसे बादशाह भी निकलेंगे। मैं अपना अहद तेरे और तेरी औलाद के साथ नसल दर नसल क़ायम करूँगा, एक अबदी अहद जिसके मुताबिक़ मैं तेरा और तेरी औलाद का ख़ुदा हूँगा।

अल्लाह ने इब्राहीम से यह भी कहा, “अपनी बीवी सारय का नाम भी बदल देना। अब से उसका नाम सारय नहीं बल्कि सारा यानी शहज़ादी होगा। मैं उसे बरकत बख़्शूँगा और तुझे उसकी मारिफ़त बेटा दूँगा। मैं उसे यहाँ तक बरकत दूँगा कि उससे क़ौमें बल्कि क़ौमों के बादशाह निकलेंगे।”

इब्राहीम मुँह के बल गिर गया। लेकिन दिल-ही-दिल में वह हँस पड़ा और सोचा, “यह किस तरह हो सकता है? मैं तो 100 साल का हूँ। ऐसे आदमी के हाँ बच्चा किस तरह पैदा हो सकता है? और सारा जैसी उम्ररसीदा औरत के बच्चा किस तरह पैदा हो सकता है? उसकी उम्र तो 90 साल है।”

अल्लाह ने कहा, “तेरी बीवी सारा के हाँ बेटा पैदा होगा। तू उसका नाम इसहाक़ यानी ‘वह हँसता है’ रखना। मैं उसके और उसकी औलाद के साथ अबदी अहद बाँधूँगा। मेरा अहद इसहाक़ के साथ होगा, जो ऐन एक साल के बाद सारा के हाँ पैदा होगा।”

रब ममरे में इब्राहीम पर ज़ाहिर हुआ

एक दिन रब ममरे के दरख़्तों के पास इब्राहीम पर ज़ाहिर हुआ। इब्राहीम अपने ख़ैमे के दरवाज़े पर था। दिन की गरमी उरूज पर थी।

इब्राहीम ने कहा, “मेरे आक़ा, अगर मुझ पर आपके करम की नज़र है तो आगे न बढ़ें बल्कि कुछ देर अपने बंदे के घर ठहरें।”

रब ने कहा, “ऐन एक साल के बाद मैं वापस आऊँगा तो तेरी बीवी सारा के बेटा होगा।”

सारा यह बातें सुन रही थी, क्योंकि वह उसके पीछे ख़ैमे के दरवाज़े के पास थी। दोनों मियाँ-बीवी बूढ़े हो चुके थे और सारा उस उम्र से गुज़र चुकी थी जिसमें औरतों के बच्चे पैदा होते हैं। इसलिए सारा अंदर ही अंदर हँस पड़ी और सोचा, "यह कैसे हो सकता है? क्या जब मैं बुढ़ापे के बाइस घिसे-फटे लिबास की मानिंद हूँ तो जवानी के जोबन का लुत्फ़ उठाऊँ? और मेरा शौहर भी बूढ़ा है।"

रब ने इब्राहीम से पूछा, "सारा क्यों हँस रही है? वह क्यों कह रही है, 'क्या वाक़ई मेरे हाँ बच्चा पैदा होगा जबकि मैं इतनी उम्ररसीदा हूँ?' **क्या रब के लिए कोई काम नामुमकिन है?** एक साल के बाद मुक़र्ररा वक़्त पर मैं वापस आऊँगा तो सारा के बेटा होगा।"

इसहाक़ की पैदाइश

तब रब ने सारा के साथ वैसा ही किया जैसा उसने फ़रमाया था। जो वादा उसने सारा के बारे में किया था उसे उसने पूरा किया। वह हामिला हुई और बेटा पैदा हुआ।

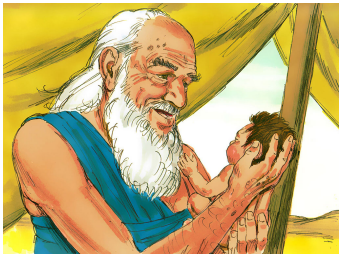

ऐन उस वक़्त बूढ़े इब्राहीम के हाँ बेटा पैदा हुआ जो अल्लाह ने मुक़र्रर करके उसे बताया था। इब्राहीम ने अपने इस बेटे का नाम इसहाक़ यानी 'वह हँसता है' रखा।

जब इसहाक़ पैदा हुआ उस वक़्त इब्राहीम 100 साल का था। सारा ने कहा, "अल्लाह ने मुझे हँसाया, और हर कोई जो मेरे बारे में यह सुनेगा हँसेगा। इससे पहले कौन इब्राहीम से यह कहने की जुर्रत कर सकता था कि सारा अपने बच्चों को दूध पिलाएगी? और अब मेरे हाँ बेटा पैदा हुआ है, अगरचे इब्राहीम बूढ़ा हो गया है।"

इसहाक़ बड़ा होता गया। जब उसका दूध छुड़ाया गया तो इब्राहीम ने उसके लिए बड़ी ज़ियाफ़त की।

सवाल

- **जो कुछ अल्लाह फ़रमाता है क्या हम उस पर भरोसा रख सकते हैं?**

  ► बेशक। वह हमेशा ही अपने वादे पर पूरा उतरता है। हम उसके कलाम पर पूरा भरोसा रख सकते हैं।

  यों एक ज़बूर फ़रमाता है,

  > रब का कलाम सच्चा है, और वह हर काम वफ़ादारी से करता है। (ज़बूर 33:4)

  दाऊद बादशाह को भी यही तजरिबा हुआ,

  > रब के फ़रमान पाक हैं, वह भट्टी में सात बार साफ़ की गई चाँदी की मानिंद ख़ालिस हैं। (ज़बूर 12:6)

  और सुलेमान बादशाह फ़रमाते हैं,

  > वाक़ई, रब ने अपना वादा पूरा किया है। (1 सलातीन 8:20)

  इंजील जलील में ख़ुदा फ़रमाता है,

  > आसमानो-ज़मीन तो जाते रहेंगे, लेकिन मेरी बातें हमेशा तक क़ायम रहेंगी। (लूक़ा 21:33)

  यसायाह नबी भी यही कुछ फ़रमाता है,

> घास तो मुरझा जाती और फूल गिर जाता है, लेकिन हमारे ख़ुदा का कलाम अबद तक क़ायम रहता है। (यसायाह 40:8)

ख़ुदा अपने वादों पर पूरा उतरा। जो वादा उसने इब्राहीम से किया था उसे उसने पूरा किया। हज़रत इब्राहीम आख़िर में उस मुल्क में पहुँच गए जिसका वादा ख़ुदा ने किया था। फिर सौ साल की उम्र में ही उनकी बीवी के बेटा पैदा हुआ, बिलकुल अल्लाह के वादे के मुताबिक़। आइए हम भी अल्लाह के कलाम पर भरोसा रखें। लूक़ा 11:28 में लिखा है,

> हक़ीक़त में वह मुबारक हैं जो अल्लाह का कलाम सुनकर उस पर अमल करते हैं।

लेकिन ख़ुदा का कलाम कहाँ पाया जाता है? किताबे-मुक़द्दस में जिसमें तौरेत, ज़बूर और इंजील शामिल हैं।

> हर पाक नविश्ता अल्लाह के रूह से वुजूद में आया है। (2 तीमुथियुस 3:16)

- **क्या ख़ुदा के लिए कोई काम नामुमकिन है?**
  - ► अल्लाह के लिए कोई भी काम नामुमकिन नहीं होता। हज़रत इब्राहीम और उनकी बीवी सारा ने अपनी ही ज़िंदगी में देखा कि ख़ुदा के लिए कोई भी काम नामुमकिन नहीं है। अल्लाह

ने उन्हें एक बेटा बख़्श दिया, उस उम्र में जब यह इनसान के नज़दीक नामुमकिन ही है (पैदाइश 18:14)।

कलामे-मुक़द्दस में कई-एक का ज़िक्र है जिनको यह तजरिबा हुआ। यों ऐयूब ने ख़ुदा से फ़रमाया,

> मैंने जान लिया है कि तू सब कुछ कर पाता है, कि तेरा कोई भी मनसूबा रोका नहीं जा सकता। (ऐयूब 42:2)

जब यरमियाह नबी ऐसे हालात में फँसे हुए थे जिनसे निकलना नामुमकिन ही था तो ख़ुदा ने फ़रमाया,

> देख, मैं रब और तमाम इनसानों का ख़ुदा हूँ। तो फिर क्या कोई काम है जो मुझसे नहीं हो सकता? (यरमियाह 32:27)

जब जिबराईल फ़रिश्ते ने इसका एलान किया कि रूहुल-क़ुद्स के वसीले से मरियम के बेटा पैदा होगा तो उसने कहा,

> अल्लाह के नज़दीक कोई काम नामुमकिन नहीं है। (लूक़ा 1:37)

और हज़रत ईसा ने भी फ़रमाया,

> जो इनसान के लिए नामुमकिन है वह अल्लाह के लिए मुमकिन है। (लूक़ा 18:27)

आइए हम इस बात से लिपटे रहें कि अल्लाह के लिए कोई बात नामुमकिन नहीं है। ख़ुदा की ज़ात कभी तबदील नहीं होती। ख़ुदा आज भी बज़ाहिर नामुमकिन काम कर सकता है, बिलकुल उसी तरह जिस तरह पुराने ज़माने में।

- **जब हम हज़रत इब्राहीम की तरह ख़ुदा पर भरोसा रखते हैं तो इसका क्या नतीजा निकलता है?**

  ► जब हम हज़रत इब्राहीम की तरह ख़ुदा की सुनकर उस पर भरोसा रखते हैं तो वह हमें अपनी बरकतों से नवाज़ता है।

  इब्राहीम का अल्लाह पर पूरा एतमाद था, और वह उसके हुक्मों पर पूरे उतरे। इसी एतमाद के तहत वह अपने मुल्क से निकलकर एक मुल्क की तरफ़ बढ़ने लगे जो वह नहीं जानते थे। हाँ, उस वक़्त वह यह भी नहीं जानते थे कि यह वादा किया गया मुल्क कहाँ है। ख़ुदा क़दम बक़दम उनकी राहनुमाई करके उस मुल्क में ले गया जिसका वादा उसने किया था।

  अल्लाह ने इब्राहीम से वादा किया कि तेरी औलाद सितारों जैसी बेशुमार होगी। गो ऐसा बिलकुल नहीं लग रहा था तो भी हज़रत इब्राहीम की उम्मीद जाती न रही बल्कि वह इस वादे से लिपटे रहे। गो मियाँ-बीवी बहुत बूढ़े थे तो भी हज़रत इब्राहीम का पक्का ईमान था कि सारा के बेटा पैदा होगा।

इसी भरोसे और ईमान के बाइस ख़ुदा ने हज़रत इब्राहीम को बरकत दी। इसी बिना पर अल्लाह ने उन्हें रास्तबाज़ क़रार दिया। हाँ, इसी वजह से ख़ुदा का इब्राहीम के साथ रिश्ता मज़बूत रहा (पैदाइश 15:6)।

इंजील जलील इसकी तसदीक़ करती है,

> इब्राहीम ने अल्लाह पर भरोसा रखा। इस बिना पर अल्लाह ने उसे रास्तबाज़ क़रार दिया। इसी वजह से वह "अल्लाह का दोस्त" कहलाया। (याक़ूब 2:23 और रोमियों 4:3-5)

उनको शक न आया बल्कि उन्हें अल्लाह के वादे पर पूरा भरोसा था। बल्कि चलते चलते उनका ईमान मज़ीद मज़बूत होता गया। वह ख़ुदा को जलाल देते रहे यह ईमान रखते हुए कि वह अपने वादे पूरा करेगा।

इसलिए इंजील जलील में फ़रमाया गया है कि हज़रत इब्राहीम हमारे लिए नमूने का बाइस हैं।

> इब्राहीम की मिसाल लें। उसने अल्लाह पर भरोसा किया और इस बिना पर अल्लाह ने उसे रास्तबाज़ क़रार दिया। तो फिर आपको जान लेना चाहिए कि इब्राहीम की हक़ीक़ी औलाद वह लोग हैं जो ईमान रखते हैं। (गलतियों 3:6-7)

मतलब है कि जब हम अल्लाह और उसके पाक कलाम पर ईमान रखते हैं तो वह हमको बरकतों से नवाज़ता है। जिस तरह लिखा है,

> चुनाँचे अपने इस एतमाद को हाथ से जाने न दें क्योंकि इसका बड़ा अज्र मिलेगा।
> (इबरानियों 10:35)

> अगर हम बेवफ़ा निकलें तो भी वह वफ़ादार रहेगा। क्योंकि वह अपना इनकार नहीं कर सकता।
> (2 तीमुथियुस 2:13)

आइए हम उस पर भरोसा रखें जो ख़ुदा अपने पाक कलाम में हमें बताता है। क्योंकि वह चाहता है कि हम उस पर एतमाद करें। तब हम भी हज़रत इब्राहीम की तरह उसके दोस्त ठहरेंगे, और वह हमें रास्तबाज़ क़रार देगा।

मज़ीद मालूमात के लिए पढ़िए तौरेत शरीफ़ पैदाइश 11:27 ता 25:11।